INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद का तीसरा कथन - "उन्हे मुझसे सहानुभूति है, लेकिन गंगाजी से नहीं": स्वामी सानंद

By : INVC Team Published On : 5 Feb, 2016 11:13 AM IST

- अरुण तिवारी-

"उन्हे मुझसे सहानुभूति है, लेकिन गंगाजी से नहीं": स्वामी सानंद

प्रो जी डी अग्रवाल जी से स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी का नामकरण हासिल गंगापुत्र की एक पहचान आई आई टी, कानपुर के सेवानिवृत प्रोफेसर, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय के पूर्व सलाहकार, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रथम सचिव, चित्रकूट स्थित ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्यापन और पानी-पर्यावरण इंजीनियरिंग के नामी सलाहकार के रूप में है, तो दूसरी पहचान गंगा के लिए अपने प्राणों को दांव पर लगा देने वाले सन्यासी की है। जानने वाले, गंगापुत्र स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद को ज्ञान, विज्ञान और संकल्प के एक संगम की तरह जानते हैं। मां गंगा के संबंध मंे अपनी मांगों को लेकर स्वामी ज्ञानस्वरूप सांनद द्वारा किए कठिन अनशन को करीब सवा दो वर्ष हो चुके हैं और 'नमामि गंगे' की घोषणा हुए करीब डेढ़ बरस, किंतु मांगों को अभी भी पूर्ति का इंतजार है। इसी इंतजार में हम पानी, प्रकृति, ग्रामीण विकास एवम् लोकतांत्रिक मसलों पर लेखक व पत्रकार श्री अरुण तिवारी जी द्वारा स्वामी ज्ञानस्वरूप सांनद जी से की लंबी बातचीत को सार्वजनिक करने से हिचकते रहे, किंतु अब स्वयं बातचीत का धैर्य जवाब दे गया है। अत: अब यह बातचीत को सार्वजनिक कर रहे हैं। हम, आपको प्रत्येक शुक्रवार को इस श्रृंखला का अगला कथन उपलब्ध कराते रहेंगे ; यह हमारा निश्चय है।

इस बातचीत की श्रृंखला में पूर्व प्रकाशित कथनों को पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें।

तीसरा कथन आपके समर्थ पठन, पाठन और प्रतिक्रिया के लिए प्रस्तुत है :

स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद - तीसरा कथन

30 सितंबर, 2013: हित तीन तरह के होते हैं: एक-भौतिक पक्ष, दूसरा-दैविक पक्ष, जो मन, इच्छा...थिंकिंग से जुडा और तीसरा आध्यात्मिक पक्ष; यह सुप्रीम होता है। जैसे जब में जेल के हॉस्पीटल वार्ड में था, तो कुछ कैदी, स्वयं को रोगी बताकर भर्ती हो जाते थे। डॉक्टर जानते थे कि दर्द नापने का कोई थर्मामीटर नहीं है। यह दर्द, एक मानसिक पक्ष है। आध्यात्मिक पक्ष..जैसे आत्मा के बारे में क्लेयरिटी.. भारतीय दर्शन में जैसा है, वह आध्यात्मिक पक्ष है। गंगाजी का भौतिक पक्ष - इसमें जो गंगा जी का रोगनाशक पक्ष है, इसे कौन कोई समझता है ; **आजीविका को समझते हैं।**

इसीलिए गंगाजी का दोहन करना चाहते हैं।

नदी दोहन का पर्याय बना नदी विकास

आज का विकास, दोहन है। ग्राउंड वाटर डेवल्पमेंट... पानी के एक्सप्लॉयटेशन को पानी विकास कहते हैं ! नदी के एक्सप्लॉयटेशन को नदी विकास कहते हैं !! डेवल्पमेंट शब्द का मतलब ही एक्सप्लॉयटेशन हो गया है। दोहन, प्रकृति का विकास नहीं हो सकता। भारतीय संस्कृति, व्यावसायिक दोहन के पक्ष में कभी नहीं थी ; बाकी लोग, सभी नदियों को एक तराजू पर रखना चाहते हैं। जितनी ज्यादा नदियों को जोडे, उतनी ज्यादा मुश्किल बढ़ती जायेगी।

सब ग्रेड से ऊपर गंगाजी

सिंधु, नर्मदा, यमुना, कावेरी,.....सात प्रमुख नदियां हैं। नदियों का भी ग्रेडेशन है ; किंतु हम यह कैसे भूल जाते हैं कि गंगाजी तो सब ग्रेड से ऊपर है। गंगा घाटी में रहने वाले कावेरी का जल लाने नहीं जाते, किंतु गंगाजी का जल लेने के लिए लोग पूरी दुनिया से आते हैं। फिल्म में भी गीत है -"मैं उस देश का वासी हूं, जिस देश में गंगा बहती है। ऐसे ही एक गीत है -" छोरा गंगा किनारे वाला..."। ऐसा किसी और नदी को लेकर नहीं है।

उन्हे गंगाजी से कोई सहानुभूति नहीं

मैने बहुत विचारा और लगा कि शासन-प्रशासन के लोग, ग्रेडिंग नहीं करना चाहते। स्थानीय लोगों का इन्ट्रस्ट भी गंगाजी की पवित्रता में नहीं, बल्कि गंगाजी से आमदनी में है। यदि ऐसा न होता, तो गंगाजी के किनारे होटल बनाने.. ऊंची-ऊंची इमारत बनाने से लोगों को कष्ट होता ; किंतु लोगों को कोई कष्ट नहीं है ; क्यों ? एक समय पर मुझसे बात होती थी, अनुपम भाई (प्रख्यात पर्यावरणविद् श्री अनुपम मिश्र) से भी ; पूछा, तो कहा -"हां, गंगा में श्रृद्धा तो है", किंतु अनुपम भाई ने राजेन्द्र (जलपुरुष) को भी कहा -" तुम भूगर्भ जल पर काम कर रहे हो ; कहां फंस गये जी डी के चक्कर में; गंगाजी में ?" इस सब से मुझे जो निराशा थी, वह वैज्ञानिकों से, पर्यावरणविद्ों से, सामाजिक कार्यकर्ताओं से.. निष्कर्ष में मैने यह पाया कि मित्र के नाते उन्हे मुझसे सहानुभूति है, लेकिन गंगाजी के प्रति उनकी कोई सहानुभूति नहीं है।

पुख्ता हुई एक धारणा

यह निराशा मुझमें भरती गई। कई कहते थे कि जनान्दोलन होना चाहिए। वह मेरी सामथ्र्य नहीं है। मैं जानता था कि पहले तो उन संगठनांे से जनान्दोलन खडा होना ही मुश्किल था ; यदि हो भी गया, तो गंगा के उद्देश्य की पूर्ति नहीं करेगा। इस तरह 2008 के शुरु में ही यह धारणा, मेरे मन में पुख्ता हो गई कि लोग मानसिक पक्ष को नकारकर, केवल फिजीकल पक्ष की बात देखते हैं। जब लोगों ने विवेकानंद जी तक से पूछ लिया था कि धर्म से क्या फायदा होगा, तो मैं क्या बताता ? कोर्ट से भी कोई उम्मीद नहीं थी।

गांधी विचार ने दिखाया अनशन मार्ग आई.आई.टी. आंदोलनों मं देखा था 100-150 की रैली का कोई प्रभाव नहीं होता। ज्यादा से ज्यादा घेराव कर सकते हैं; प्रदर्शन कर सकते हैं। मैने देखा कि मेरे साथ तो इतने लोग भी नहीं। अंतत: गांधी जी का विचार मन में आया ; अनशन - अकेले आदमी का हथियार ; तो फिर मैने रामनवमी, 2008 को चित्रकूट में संकल्प लिया कि मेरा बचा हुआ सब जीवन गंगाजी के लिए है। संकल्प लिया कि यदि परियोजनायें निरस्त नहीं होती हैं, तो गंगा दशहरा, 2008 यानी 13 जून को अनशन पर बैठ जाउंगा। इसी संकल्प के समय मैने गंगा जी की समस्या और उपाय पर दो पेज लिखे। राहुल देव (दूरदर्शन) और संजय देव को दिए भी। मैं चाहता था कि इंडियन एक्सप्रेस के सभी एडिशन में छपे।मैं सोचता था कि साउथ इंडिया के लोग मेरी बात को ज्यादा समझेंगे, उसमें खर्च की बात आई, तो मैने नहीं किया।

आशा के आधार अनशन के पीछे की पहली आशा थे - गिरधर आचार्य जी। 13 जून, 2008 का उत्तरकाशी का अनशन मैं, गिरधर आचार्य जी की प्रेरणा से कर रहा था। उनका कथन था कि मणिकर्णिका घाट पर न करूं, विश्वनाथ मंदिर पर करूं। लेकिन वहां कोई शौचालय नहीं था। मणिकर्णिका के पास सुलभ शौचालय था ; सो, मणिकर्णिका का स्थान तय किया। इस बात से गिरधर महाराज जी नाराज हो गये। दूसरा बिंदु था कि अनशन के पीछे एक इंस्टीटच्युशन बन गया - 'भागीरथी बचाओ संकल्प'; इंडियन काउंसिल फॉर एन्वायरो लीगल एसोसिएशन थी....तो रवि चोपङा, राजेन्द्र, मेहता आदि को मिलाकर एक कोर कमेटी बना ली गई थी। इससे गिरधर महाराज और नाराज हो गये। वे चाहते थे कि वह खुद, प्रिया और मेहता की कमेटी बने। हालांकि उनके भक्त वहां रहे, लेकिनमेरे एक सप्ताह के अनशन के दौरान गिरधर महाराज जी उत्तरकाशी नहीं आये।

मिला समर्थन हालांकि, मैं किसी ग्रुप के बंधन में नहीं था ; ज्योतिषपीठ के माधवाश्रम जी का लैटर पैड पर लिखा हुआ समर्थन आया। 15 को शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी का समर्थन आया। मुझे पता था कि वह, हरिद्वार में कैम्प कर रहे हैं। समर्थन पर बातचीत को लेकर राजेन्द्र जी के साथ बहनोई वहां गये। 17 जून को लौटे, तो स्वयं शंकराचार्य स्वरूपानंद जी आ गये। हर्ष था कि हरिद्वार से सिर्फ समर्थन देने वह स्वयं आये। उन्होने सभा कर समर्थन दिया और अपने सन्यासी परिपूर्णानन्द को छोङ गये। सुंदरलाल बहुगुणा जी, पत्नी के साथ चार दिन तक आते रहे। बागपत के मशहूर भगतजी बालूशाही वाले देवेन्द्र भगत भी अनशन पर साथ रहे।

देहरादून शिफ्ट कराने की शासकीय योजना उधर 11 जून को खंडूरी जी ने उत्तरकाशी में पाला-मनेरी का शिलान्यास कर दिया था। उत्तराखण्ड में उस वक्त के चीफ सेक्रेट्री - एस. के. दास थे। उनसे मेरा, 1990 से संपर्क था। वह कभी सिर्फ मुझसे मिलने के लिए ही चित्रकूट आये थे। शासन, प्रशासन और डॉक्टर सब रेस्पक्टफुल्ली आते थे। तीसरे दिन से कहने लगे कि पेशाब में टॉन्ट बॉडी आने लगी है। मेरी भतीजी डॉक्टर थी। उसने कहा -" मेरे सामने टेस्ट करो", तो डॉक्टरों ने कहा कि उनसे कहा गया है कि देहरादून शिफ्ट कराना है।

खंडूरी जी का यू टर्न 15 जून को एस. के. दास का फोन आया ; कहा कि खंडूरी जी मिलना चाहते हैं। मैने मना कर दिया। 17 जून को हंसदेवाचार्य व परमार्थ निकेतन से चिदानंद मुनि आये और चर्चा की। एक तरह से ये खंडूरी जी के भेजे हुए थे। 17 की ही रात को चिदानंद जी का मैसेज आया कि पाला-मनेरी और भैरोंघाटी प्रोजेक्ट स्टेट के हैं, तो राज्य सरकार निरस्त करने को तैयार है।

(इसे यू टर्न कहना इसलिए उचित होगा, चूंकि अनशन की पूर्व चेतावनी के बावजूद, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री खंडूरी जी ने अनशन शुरु होने से चंद दिन पूर्व ही वहां एक पनबिजली परियोजना का शिलान्यास किया था। - अ. ति.)

पत्र मिले, तो दिल्ली चलूं मैने कहा कि इससे हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होता। लोहारी-नाग-पाला तो फिर भी बनेगा।

उन्होने कहा कि वह तो केन्द्र का है। मैने कहा कि मैं उपवास खत्म नहीं कर सकता। हां, यदि राज्य सरकार मुझे पाला-मनेरी और भैरोंघाटी प्रोजेक्ट निरस्त करने का पत्र भेजती है, तो मैं उन्हे धन्यवाद दूंगा और यह भी कर सकता हूं कि आगे का उपवास दिल्ली में करूं। इसके पीछे एक वजह यह भी थी कि गिरधर महाराज की नाराजगी के कारण मैं अनकम्फर्ट फील कर रहा था। दूसरी वजह यह कि मेरा पूरा परिवार व साथी वहां पडे थे और मै कभी नहीं चाहता था कि अनशन की वजह से औरों को कष्ट हो। हालांकि मुझे उनके रहने-सहने का इंतजाम नहीं करना था, फिर भी मुझे इसका कष्ट था। इस वजह से भी मैने दिल्ली जाने के बारे में सोचा।

संवाद जारी...

अगले सप्ताह दिनांक 12 फरवरी, 2016 को पढ़िए स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद श्रृंखला का चौथा कथन

परिचय -:

अरुण तिवारी

लेखक ,वरिष्ट पत्रकार व् सामजिक कार्यकर्ता

1989 में बतौर प्रशिक्षु पत्रकार दिल्ली प्रेस प्रकाशन में नौकरी के बाद चौथी दुनिया साप्ताहिक, दैनिक जागरण-दिल्ली, समय सूत्रधार पाक्षिक में क्रमशः उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक कार्य। जनसत्ता, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नई दुनिया, सहारा समय, चौथी दुनिया, समय सूत्रधार, कुरुक्षेत्र और माया के अतिरिक्त कई सामाजिक पत्रिकाओं में रिपोर्ट लेख, फीचर आदि प्रकाशित।

1986 से आकाशवाणी, दिल्ली के युववाणी कार्यक्रम से स्वतंत्र लेखन व पत्रकारिता की शुरुआत। नाटक कलाकार के रूप में मान्य। 1988 से 1995 तक आकाशवाणी के विदेश प्रसारण प्रभाग, विविध भारती एवं राष्ट्रीय प्रसारण सेवा से बतौर हिंदी उद्घोषक एवं प्रस्तोता जुड़ाव।

इस दौरान मनभावन, महफिल, इधर-उधर, विविधा, इस सप्ताह, भारतवाणी, भारत दर्शन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण ओ बी व फीचर कार्यक्रमों की प्रस्तुति। श्रोता अनुसंधान एकांश हेतु रिकार्डिंग पर आधारित सर्वेक्षण। कालांतर में राष्ट्रीय वार्ता, सामयिकी, उद्योग पत्रिका के अलावा निजी निर्माता द्वारा निर्मित अग्निलहरी जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के जरिए समय-समय पर आकाशवाणी से जुड़ाव।

1991 से 1992 दूरदर्शन, दिल्ली के समाचार प्रसारण प्रभाग में अस्थायी तौर संपादकीय सहायक कार्य। कई महत्वपूर्ण वृतचित्रों हेतु शोध एवं आलेख। 1993 से निजी निर्माताओं व चैनलों हेतु 500 से अधिक कार्यक्रमों में निर्माण/ निर्देशन/ शोध/ आलेख/ संवाद/ रिपोर्टिंग अथवा स्वर। परशेप्शन, यूथ पल्स, एचिवर्स, एक दुनी दो, जन गण मन, यह

हुई न बात, स्वयंसिद्धा, परिवर्तन, एक कहानी पत्ता बोले तथा झूठा सच जैसे कई श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम। साक्षरता, महिला सबलता, ग्रामीण विकास, पानी, पर्यावरण, बागवानी, आदिवासी संस्कृति एवं विकास विषय आधारित फिल्मों के अलावा कई राजनैतिक अभियानों हेतु सघन लेखन। 1998 से मीडियामैन सर्विसेज नामक निजी प्रोडक्शन हाउस की स्थापना कर विविध कार्य।

संपर्क -: ग्राम- पूरे सीताराम तिवारी, पो. महमदपुर, अमेठी, जिला- सी एस एम नगर, उत्तर प्रदेश , डाक पता: 146, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली- 92 Email:- amethiarun@gmail.com . फोन संपर्क: 09868793799/7376199844

Disclaimer : The views expressed by the author in this feature are entirely his own and do not necessarily reflect the views of INVC NEWS .

URL : https://www.internationalnewsandviews.com/स्वामी-सानंद-गंगा-संकल्प/

INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.